जादू-टोना और औरतें

डॉ. अमन मदान

हाल के वर्षों में बढ़ती संख्या में औरतों पर जादू-टोना करने के आरोप लगे हैं, खास तौर से मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ प्रांतों में। ऐसे आरोप लगाने के बाद उनकी पिटाई की जाती है, उन्हें मल खाने पर मजबूर किया जाता है और कई अन्य तरीकों से ज़लील किया जाता है और हत्या तक कर दी जाती है। इस पूरे मामले को समझने के लिए हमें जादू-टोने की प्रकृति की खोजबीन करनी होगी। इसके अलावा, चूंकि ऐसे मामलों में अक्सर औरतों पर ही हमले होते हैं, इसलिए समाज में औरतों की स्थिति पर भी ध्यान देना होगा।

कुछ तर्कवादी जादू-टोने पर हंसते हैं या उसे हिकारत के भाव से देखते हैं। वे कहते हैं कि यह महज़ अंधविश्वास है। अलबत्ता, कई समाज वैज्ञानिक मानते हैं कि जादू-टोना मात्र किसी फालतू दिमाग का भय और चालबाज़ी नहीं है। जैसे, मानव वैज्ञानिक एक स्तर पर तो मानते हैं कि जादू-टोना वह सब कुछ नहीं करता जिसका दावा किया जाता है - मिर्चियां जलाकर या मुर्गे की अंतड़ियां निकालकर किसी दुश्मन की सेहत पर कोई असर नहीं डाला जा सकता। ऐसे कार्यों से यह तो संभव है कि जादू-टोना करने वाले या तमाशबीनों को छींकें आने लगे या वे त्रस्त हो जाएं, मगर किसी ऐसे व्यक्ति पर इस सबका कोई असर नहीं होगा जो वहां मौजूद नहीं है। फिर भी कई संस्कृतियों में कर्मकांड और जादू-टोने में काफी भावनात्मक ताकत मानी जाती है। ऐसे समाजों में जादू-टोना करने के आरोप कोई मामूली बात नहीं है। संस्कृति की ताकत को कम करके नहीं आंकना चाहिए।

मानव वैज्ञानिक कहते हैं कि जादू-टोना अर्थों और भावनाओं के एक सांस्कृतिक ताने-बाने पर टिका होता है। कुछ शुरुआती मानव वैज्ञानिकों का मत था कि जादू-टोना की प्रथा आम तौर पर उन जगहों पर नज़र आती है, जिन्हें गोरे लोगों ने फतह किया है। इन मानव वैज्ञानिकों की राय बनी थी कि ये लोग 'आदिम' हैं और अपने तनावों और चिंताओं से मुक्ति पाने के लिए जादू-टोने का इस्तेमाल करते हैं। माना गया कि शत्रु से भयभीत महसूस करने पर राजा पशुओं की बलि देगा या उफनती नदी को शांत करने के लिए उसे सोने का हार या नथनी भेंट चढ़ाई जाएगी। मानव वैज्ञानिकों ने पाया कि इन देशों में प्रायः जादू-टोने और धर्म के बीच भेद कर पाना मुश्किल था।

ब्रोनिस्लाव मेलिनोव्स्की जैसे बाद के मानव वैज्ञानिकों ने बताया कि लोग जादू-टोने या धर्म का उपयोग मात्र तनाव-शामक के रूप में नहीं करते हैं। उनका तर्क था कि कई समाजों में जादू-टोना और धर्म उन्हें क्रियाकलापों का बुनियादी पंचांग उपलब्ध कराते हैं। कर्मकांड इस बात का संकेत देते हैं कि बोवनी कब शुरू की जाए, कटाई कब पूरी हुई और कब जश्न मनाने का समय आ गया है। इस अर्थ में ये कर्मकांड महत्त्वपूर्ण सामाजिक क्रियाकलापों के लिए संसाधनों को एक साथ लाकर सम्बंधित कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करने के तरीके थे। आज कई समाज वैज्ञानिक बताते हैं कि जादू-टोना जैसी क्रियाएं टेक्नॉलॉजी की दृष्टि से निहायत विकसित समाजों में भी की जाती हैं।

मेलिनोव्स्की के मुताबिक, जादू-टोने का एक प्रमुख पहलू संस्कृति को व्यक्त करना और लागू करना था। यह उस पूरे समाज की संस्कृति हो सकती है या समाज के एक छोटे-से समूह की संस्कृति भी हो सकती है। भारत के कुछ हिस्सों में घर के बाहर एक मटकी टांगी जाती है। इस पर ऐसी शक्ल पोती जाती है कि यह एक दैत्य जैसी दिखे। ऐसा माना जाता है कि यह ईर्ष्या व बुरी नज़र से सुरक्षा करेगी। यह छोटा-सा टोटका उस मकान को बनाने वालों की खास हैसियत और उनके तनाव की स्वीकारोक्ति है क्योंकि अन्यथा ईर्ष्या को लेकर अपनी चिंताओं से मुक्त रहने में बहुत अधिक संसाधन लगाने होंगे और इस तरह की ईर्ष्याएं नाते-रिश्तेदारों में आम बात है। यह मटकी एक

वक्तव्य है, और यह छोटा-सा टोटका उनकी असहजता को कुछ हद तक कम कर देता है। इस प्रक्रिया में मकान के स्वामी और बाकी समुदाय के बीच सम्बंध भी पुष्ट होते हैं।

मानव वैज्ञानिकों ने मत व्यक्त किया कि जादू-टोने की ताकत किसी पारलौकिक प्रक्रिया में नहीं बल्कि मानव मस्तिष्क में प्रतीकों की भावनात्मक शक्ति में निहित है। जादू टोना करने वाले व्यक्ति के शारीरिक हावभाव से, उसके क्रियाकलाप से और जादू-क्रिया में इस्तेमाल की गई सामग्री से यह शक्ति मुक्त हो जाती है। इसीलिए कई जादू-टोनों में खून, तेज़ गंध, शराब और मांस जैसे शक्तिशाली प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।

अपनी प्रतीकात्मक शक्ति के ज़रिए जादू-टोना समाज में कतिपय सम्बंधों को पुष्ट करता है। हो सकता है ये सम्बंध और अर्थ किसी ऐसे तबके के हों जिसका समाज में दबदबा है। यह भी हो सकता है कि ये किसी दबे हुए तबके द्वारा हावी तबके को एक चुनौती स्वरूप हों। यह कोई अनहोनी बात नहीं है कि दबंग तबकों या व्यक्तियों में इस बात का डर रहता है कि उनके शत्रु जादू-टोने का सहारा लेंगे। हाल ही में कर्नाटक के मुख्यमंत्री गंभीर संकट के दौर से गुज़र रहे थे, और उन्होंने घोषणा की थी कि जादू-टोना करने वाले उन्हें परेशान कर रहे हैं। मुख्य विरोधी पार्टी ने यही कहा कि ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री थके-हारे हैं और उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए।

जब औरतों पर कई बार आरोप लगते हैं कि वे जादू-टोने की मदद से नुकसान पहुंचा रही हैं, तो इससे हमें समाज और उसमें मौजूद टकरावों के बारे में काफी पता चलता है। औरतों व मर्दों को एक-दूसरे का साथ चाहिए मगर उनका रिश्ता तनावग्रस्त भी होता है। समाज इस तनाव को संभालने व खामोश रखने के कई उपाय करता है, जिनमें कई सारे रीति-रिवाज़ और कर्मकांड भी शामिल हैं। विवाह को लेकर कई धारणाएं भी यही काम करती हैं। मगर टकराव तो खदकता रहता है। जहां पुरुष पत्नी के रूप में सीता की कामना करते हैं, वहीं शायद ही कोई मां चाहती हो कि उसकी बेटियां सदा कष्ट में रहे और अपने स्वामी की सेवा करती रहे। स्त्री और पुरुष के बीच तनाव सिर्फ सेक्स से जुड़ी भावनाओं को लेकर नहीं हैं। इन तनावों का सम्बंध इस बात से भी है कि परिवार व समुदाय के बारे में कौन निर्णय लेता है और कौन उनके तौर-तरीके तय करता है। भारत समेत कई समाजों में पुरुषों की अपेक्षा औरतों के व्यवहार को नियंत्रित करने के तरीके कहीं ज़्यादा हैं। इससे हमें पता चलता है कि समाज में किसे ज़्यादा ताकत हासिल है।

जादू-टोने के आरोप जेंडर की इस राजनीति की एक और अभिव्यक्ति है। युरोप और अमेरिका में हुए अध्ययनों से पता चलता है कि कैसे सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में वहां हज़ारों औरतों को डायन बताकर ज़िन्दा जलाया गया था।

यही वह समय था जब ये समाज पूंजीवाद के प्रादुर्भाव और बाज़ारों के खुलने के साथ उथल-पुथल करने वाले परिवर्तनों से गुज़र रहे थे। जीवन के पुराने तौर-तरीकों को जिस ढंग से चुनौती मिल रही थी, वह अभूतपूर्व था। जो औरतें समाज से थोड़ी भिन्न थीं, वे असुरक्षा और डर का केंद्र बन गईं। आम तौर पर, अकेली रहने वाली बुज़ुर्ग औरतों, मुखर व आज़ादख्याल औरतों को पकड़कर डायन घोषित किया गया।

आज का भारत अभूतपूर्व ढंग से तेज़ परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है। पूरे देश में खेती के अस्तित्व पर संकट है तथा पुराने काम-धंधे बंद हो रहे हैं और काम की तलाश में लोगों को दूर-दूर के शहरों में जाना पड़ रहा है। जहां कुल संपत्ति में तो वृद्धि होती दिखती है, वहीं बढ़ती संख्या में लोगों के जीवन के पुराने तरीके तार-तार हो रहे हैं। इस सबके पीछे जो वैश्विक प्रक्रियाएं हैं, उनका ओर-छोर समझना मुश्किल होता है। यह समझ पाना भी मुश्किल होता है कि स्थानीय व्यापार का नुकसान दूरस्थ राजनीति की वजह से हो रहा है। इसकी बजाय ज़्यादा आसान यह होता है कि किसी गुस्सैल बूढ़ी औरत या किसी आकर्षक मगर गैर-दब्बू गृहिणी को इसके लिए ज़िम्मेदार मान लिया जाए। आजकल डायनें (टोहनियां) हर जगह नज़र आने लगी हैं। उन पर हमला करके एक ऐसी दुनिया को लौटाने का निष्फल प्रयास किया जा रहा है, जो तेज़ी से लुप्त हो रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***